तापमान
अधिकतम 30 .0 डिग्री
न्यूनतम 27 .0 डिग्री

हरिभूमि
जींद-कैथल भूमि
रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

11 सावन माह के अंतिम दिन शिवालयों में सुबह....

11 सामाजिक कुप्रथा के खिलाफ आवाज उठाएं

ख़बर संक्षेप

अवैध शराब सहित एक व्यक्ति दबोचा

जींद। शहर थाना पुलिस ने झांझ खुर्द गांव के एक व्यक्ति को शराब तस्करी में गिरफ्तार किया है। पुलिस चौकी पटियाला चौक की एक टीम जब हांसी रोड पर गश्त पर थी तो उसे सूचना मिली कि भुपेंद्र वासी झांझ खुर्द पुल के नीचे अवैध शराब लिए खड़ा है व किसी को बेचने की फिराक में है। सूचना पर पुलिस जब मौके पर पहुंची तो पुलिस पार्टी को देख कर मौका से अपने कंधे पर कट्टा प्लास्टिक रख कर मौका से भागने लगा।

दुकान से नकदी चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

कैथल। गांव अगौंध में एक कपड़े की दुकान से नकदी चोरी करने के मामले की जांच थाना गुहला पुलिस के एसआई रामचंद्र की टीम द्वारा करते आरोपी भूसला निवासी गोपाल व विशाल उर्फ हर्ष को नियमानुसार गिरफ्तार कर लिए गए। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गांव अगौंध निवासी महिला पोली देवी की शिकायत अनुसार गांव में लवली क्लॉथ हाउस के नाम से कपड़े की दुकान कर रखी है।

स्कार्पियो की टक्कर से बाइक सवार दो घायल

जींद। सेक्टर आठ में एक स्कॉर्पियो द्वारा एक बाइक को टक्कर मारने से दो व्यक्ति घायल हो गए। सिविल लाइन थाना पुलिस ने स्कार्पियो चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। रूप नगर निवासी जितेंद्र सैनी ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि वह एक दुकान पर शीशे का काम करता है।

नकदी-आभूषण चोरी के मामले में आरोपी पकड़ा

कैथल। कैथल क्षेत्र से एक मकान में चोरी करने के मामले की जांच एंटी व्हीकल स्टाफ प्रभारी एसआई प्रदीप कुमार की अगुवाई में एचसी अनिल कुमार की टीम द्वारा करते आरोपी गांव मानस निवासी असलम खान को गिरफ्तार करके 3 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया था। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि चंदाना गेट कैथल निवासी रमन की शिकायत पर केस दर्ज किया था।

लंबित मांगों के विरोध में करेंगे आंदोलन तेज

जींद। प्रदेश के बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी सरकार द्वारा जियो फेसिंग लोकेशन आधारित उपस्थिति लगाने के गैर कानूनी आदेश को वापस लेने सहित अपनी लम्बित मांगो को लेकर आन्दोलन को तेज करेंगे। एसोसिएशन की राज्य प्रधान शर्मिला देवी, महासचिव सहदेव आर्य ने बताया कि जिस तरह महानिदेशक ने सभी सिविल सर्जन को जियो फेसिंग लोकेशन आधारित उपस्थिति लगाने के लिए केवल महिला एमपीएचडब्लू को बाध्य करने वाला पत्र जारी किया है।

कलायत से बाइक चोरी का केस दर्ज

कैथल। कस्बा कलायत से चोर एक बाइक चुरा कर ले गए। कलायत के सोमनाथ ने कलायत पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 8 अगस्त को चोर बाद दोपहर को करीब 3:00 बजे कस्बा कलायत से उसकी बाइक चुरा कर ले गए। चुराई गई बाइक की कीमत करीब 25000 बताई गई है।

जींद प्रशासन की सख्ती से चली प्राइवेट बसें, दिनभर रही मारामारी, निजी बसों ने 93 फेरे किए मिस

बहनों ने दूसरे दिन भी बसों में मुफ्त यात्रा को लेकर लड़ी जंग

संख्या को देखते देर रात तक सेवा रही बहाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

रक्षा बंधन पर्व को लेकर रोडवेज विभाग द्वारा बहनों के लिए मुफ्त की गई यात्रा के दूसरे दिन शनिवार को भी परेशानी कम नहीं हुई। हालांकि रोडवेज अधिकारियों द्वारा दिशा-निर्देश दिए गए थे कि जिस भी रूट पर यात्रियों की संख्या अधिक होती है वहीं अतिरिक्त बस को चला दिया जाएगा और बहनों को परेशानी नहीं आने दी जाएगी। शनिवार को सबसे ज्यादा भीड़ जींद-रोहतक, जींद-हिसार, जींद-कैथल, पानीपत गोहाना, नरवाना व बरवाला रूटों पर ही। इन रूटों पर प्रशासन की सख्ती के बाद प्राइवेट बसें भी चली। जिससे बहनों को कुछ राहत मिली। बस अड्डा पर बहनों को बसों के लिए काफी समय तक इंतजार करना पड़ा। इसके साथ ही जैसे ही कोई बस बूथ पर लगती तो उसमें चढने की होड लग जाती। वहीं परिवहन समिति बसों ने पानीपत, असंध, नरवाना, हांसी, गोहाना, बरवाला रूटों पर फेरे मिए किए। जिसके चलते इन रूटों पर बहनों को बसों में मुफ्त यात्रा के लिए मारामारी रही। प्राइवेट बसों की मनमानी पर रोक का प्रयास नही हुआ कामयाबः शुक्रवार को प्राइवेट बसों ने बसों का संचालन कम कर दिया था। दोपहर 12 बजे से लेकर साढ़े तीन बजे तक हांसी, गोहाना, पुंडरी, असंध, पानीपत, नरवाना रूट पर प्राइवेट बसों के 31 टाइम मिस रहे थे। हालांकि साढ़े तीन घंटे के दौरान जींद से बरवाला रूट पर प्राइवेट बस चालकों के कोई टाइम मिस नही रहा था। शनिवार को ऐसा न हो, इसके लिए रोडवेज अधिकारियों ने निर्देश दिए थे कि अगर किसी भी प्राइवेट बस संचालक के खिलाफ शिकायत मिलती है, तो उसके खिलाफ विभागीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। बावजूद इसके शनिवार को दूसरे दिन परिवहन समिति की बसों ने 93 चक्कर मिस किए। रोडवेज प्रबंधन परिवहन समिति की बसों के खिलाफ कार्रवाई के लिए आरटीए को लैटर लिखेगा। बस अड्डा पर रही महिलाओं की भीड़, पुलिसबल रहा तैनातः शनिवार को पूरा दिन महिला यात्रियों के लिए मुफ्त परिवहन सुविधा रहने के कारण संख्या ज्यादा रही। ऐसे में पूरे दिन बस स्टैंड के हर बूथ पर निर्धारित स्थान पर जाने के लिए महिला यात्री काफी संख्या में मौजूद रही। वहीं जो महिलाएं शुक्रवार को भाई को राखी बांधन के लिए गई हुई थी वह शनिवार को अपने घर वापस आई तो दोपहर बाद फिर से बसों के माध्यम से वापस आई। सुरक्षा की दृष्टि से बस अड्डा पर पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था।

जींद। बस अड्डा पर बसों का इंतजार करते बहनें। फोटो :हरिभूमि

रिपोर्ट भेजी जाएगी आरटीए के पास : जीएम

जींद डिपो के महाप्रबंधक राहुल जैन ने बताया कि शनिवार को दूसरे दिन सभी रोडवेज बसें रूटों पर रही। इससे महिला यात्रियों को कोई परेशानी नहीं आई है। निजी बसों ने दूसरे दिन भी कई चक्कर मिस किए हैं, जिनकी रिपोर्ट बनाकर आरटीए के पास भेजी जाएगी।

निजी बस संचालकों ने महिलाओं से वसूला किराया

फ्री की सवारी से पसीना-पसीना बहनें, बेकाबू भीड़ ने किया परेशान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

सरकार के आदेशों के तहत रक्षा बंधन पर्व पर महिलाओं के लिए निशुल्क यात्रा शनिवार को दूसरे दिन भी जारी रही। पर्व पर रोडवेज बसों में मुफ्त की सवारी से बहनें पसीना-पसीना हुई। इस दौरान बेकाबू भीड़ ने महिलाओं को परेशान किया। वहीं, पहले दिन की तरह दूसरे दिन भी प्राइवेट बस संचालकों की मनमानी जारी रही। पहले दिन तो 110 में करीब 20 से 30 प्राइवेट बसें ही चलाई। निजी बस संचालकों ने निशुल्क बस सेवा के चलते रूटों पर अपने चक्कर कम कर दिए। असंध, चीका, पूंडरी, नरवाना और टोहना व नगूरा रूट पर चलने वाली निजी बसें केवल नाम-मात्र बसें ही चलीं। निजी बस संचालकों ने मनमानी करते अधिक भीड़ वाले रूटों पर बसों की संख्या को कम किया। यही नहीं, कई निजी बस संचालकों ने महिलाओं से किराया भी वसूला। नए बस स्टैंड पर 30 अतिरिक्त बसों को लगाया गया था। इसके साथ ही करीब 50 रोडवेज कर्मियों की भी अतिरिक्त ड्यूटी लगाई गई थी। पहले दिन करीब 20 हजार महिलाओं ने निशुल्क यात्रा की थी। दो दिन में 60 हजार से अधिक महिलाओं व 15 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों ने कैथल डिपो की रोडवेज बसों के माध्यम से निशुल्क यात्रा की। सुबह के समय पहले तो भीड़ कम दिखी, लेकिन दोपहर होने के बाद महिलाओं की संख्या बढ़ती गई। सीटों के लिए कई महिलाएं बसों की ओर दौड़ती भी नजर आईं। कई को तो खड़े होकर बस में सफर करना पड़ा। भीड़ अधिक होने के कारण कई रूटों पर बसों की समस्या भी हुई। वहीं, दूसरे दिन भी अधिक भीड़ वाले रूटों पर निजी बसों की संख्या कम रही। दूसरी ओर विभाग को कई गांवों में बस स्टॉप पर बसें न मिलने की शिकायत मिली। इसके बाद कैथल डिपो के यातायात प्रबंधक ने अलग से कर्मियों की ड्यूटियां लगाकर शिकायतों का समाधान किया। इस बार रोडवेज के कैथल डिपो में 202 बसों का संचालन किया गया था।

कैथल। बस स्टैंड पर बसों का इंतजार करते यात्री। फोटो :हरिभूमि

अतिरिक्त रोडवेज कर्मियों की ड्यूटियां लगाई

यातायात प्रबंधक विरेंद्र पाल स्वामी ने बताया कि शनिवार को सुबह के समय तो महिलाओं की बसों में अधिक भीड़ नहीं थी, लेकिन दोपहर बाद भीड़ हुई। इस कारण महिलाओं को परेशानी दूर करने के लिए अतिरिक्त रोडवेज कर्मियों की ड्यूटियां लगाई गई थी। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए समय-समय पर महिलाओं सहित अन्य यात्रियों को जागरूक किया गया था।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस भी तैनात

बस स्टैंड के यातायात प्रबंधक विरेंद्र पाल स्वामी ने बस के काउंटरों का भी निरीक्षण किया। बस स्टैंड पर महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस भी तैनात रही। रोडवेज के अधिकारियों के अनुसार भीड़ को देखते हुए करीब 50 अतिरिक्त कर्मियों की ड्यूटियां रात तक लगाई गई थी।

ये बोली महिलाएं

रानी देवी ने बताया कि उसे कलायत के कालेखां में जाना था, करीब एक घंटे के बाद बस मिली। इसके साथ ही कुरुक्षेत्र जाने वाली महिला सुदेश कुमारी ने बताया कि उसे भी करीब डेढ़ घंटे के बाद बस मिली।

केंचुआ पालन के नाम पर २१ लाख ठगे

- करनाल और यमुनानगर की फर्म के चार नुमाइंदों के खिलाफ मामला दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

सदर थाना पुलिस ने किसानों के साथ वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने, केंचुआ पालन के नाम पर 21 लाख रुपये की धोखाधड़ी करने पर कंपनी और उसके पार्टनर के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव कंडेला निवासी राममेहर ने सदर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह खेती बाड़ी का काम करता है। यमुनानगर के जगाधरी में सेक्टर 17 स्थित एग्रो नेचर फार्मिंग कंपनी वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लिए केंचुआ फार्म बना कर केंचुआ पालन का काम करती है।

यह फर्म केंचुए पालन के लिए 10 हजार रुपये प्रति बेड की दर से गोबरए केंचुआए पॉलीथिन सहित बेड तैयार करती है। इसे कम से कम दो साल की अवधि के लिए तेयार किया जाता है। राममेहर ने बताया कि उसका इस कंपनी के साथ दो साल का इकरारनामा हुआ है। जिसके तहत उसने कंपनी तथा इसके पार्टनर करनाल जिले के बाजीदा गांव निवासी जोगेंद्र राज को 10 लाख रुपए शुरूआत में दिए थे। इनमें सात लाख 90 हजार रुपये चेक के जरिए और दो लाख 20 हजार रुपये की पेमेंट नकद की थी।

जींद। शिक्षा मंत्री का स्वागत करते हुए। फोटो :हरिभूमि

शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए कार्य किए जाएं : शिक्षा मंत्री

जींद। हरियाणा के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने शिक्षा बोर्ड उपाध्यक्ष सतीश शाहपुर के आवास पर पहुंचे। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने बोर्ड से संबंधी विशेष प्रकार की समस्याओं को सुना साथ ही सभी अधिकारियों को विशेष रूप से हिदायत भी की शिक्षा के क्षेत्र में जो भी हो सके नए-नए कार्य किए जाएं ताकि ग्रामीण अंचल में इसका सीधा फायदा हो सके। गांव और गरीबों तक अच्छी और सुलभ शिक्षा पहुंचाई जा सके जो सरकार का मुख्य लक्ष्य है। शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने बहुत ही सौहार्द पूर्ण वातावरण में उपाध्यक्ष को स्पष्ट रूप से यह राय दी कि आप लोग शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे से अच्छा जो भी कार्य करो मैं आपकी बिल्कुल साथ खड़ा हूं और पूरी हरियाणा सरकार और मुख्यमंत्री नायब सैनी का पूर्ण सहयोग रहेगा। विद्यालय बोर्ड के सभी अधिकारी और कर्मचारियों ने मंत्री के समक्ष मॉडल संस्कृति और पीएमश्री विद्यालय जो सीबीएसई के अंतर्गत जा रहे हैं हरियाणा विद्यालय बोर्ड में करने की अपील की और साथ ही आश्वासन दिया कि विद्यालय शिक्षा बोर्ड की कार्य प्रणाली अति आधुनिक और नई शिक्षा नीति को आगे बढ़ाने में पूर्णता सक्षम है और शिक्षा बोर्ड के पास अपना बहुत मजबूत ढांचा स्थापित है।

जींद-भिवानी रोड पर बन रहे अंडरपास पर निर्माण कार्य शुरू

जींद। जींद-भिवानी रोड पर रेलवे अंडरपास का निर्माण कार्य पूरा होते-होते दो साल हो गए हैं लेकिन अभीतक निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ है। जिसके चलते आमजन परेशान है। अब शनिवार को बारिश के बीच निर्माण कार्य शरू हुआ है। लोगों को उम्मीद है कि अब निर्माण कार्य पूरा होने के बाद ही कार्य खत्म होगा। जींद विकास संगठन के अध्यक्ष डा. राजकुमार गोयल, सावर गर्ग ने कहा कि दिसंबर 2022 में इस अंडरपास का निर्माण कार्य शुरू किया गया था। जिससे मार्च 2024 तक पूरा किया जाना था। मार्च 2025 का अगस्त माह आ चुका है लेकिन अभी तक यह निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ है। भिवानी रोड अढाई साल से बंद है। ऐसे में भिवानी रोड पर जाने वाले लोगों को रोहतक रोड बाईपास से होकर भिवानी रोड बाईपास के रास्ते से होकर जाना पड़ता है।

बूंदाबांदी से मौसम सुहाना, तापमान लुढ़का

कृषि विशेषज्ञ के अनुसार बारिश धान, मक्का की फसल के लिए फायदेमंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

जींद में शनिवार को दिनभर रूक-रूक कर हुई बूंदाबांदी और हलकी बारिश ने मौसम को सुहावना बना दिया है। इस बारिश से जहां तापमान में कमी आई वहीं फसलों के लिए भी यह लाभकारी साबित हुई। शनिवार को अधिकतम तापमान 30 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 27 डिग्री रहा। हवा की गति पांच किलोमीटर तथा मौसम में आद्रता 85 प्रतिशत रही। मौसम विभाग के अनुसार आगामी एक-दो दिन तक हलकी बारिश और बूंदाबांदी होने की संभावना है। शनिवार सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और दोपहर तक हलकी बूंदाबांदी होती रही। कुछ इलाकों में हलकी बारिश भी देखी गई। इस बारिश ने गर्मी से राहत दी और मौसम में ठंडक घोल दी। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार यह बारिश धान, मक्का और अन्य फसलों के लिए फायदेमंद है। क्योंकि इससे खेतों में नमी बनी रहेगी और फसलों की वृद्धि में मदद मिलेगी। तापमान में भी चार डिग्री की कमी दर्ज की गई है। जिससे लोगों को उमस भरी गर्मी से राहत मिली। मौसम विभाग के अनुसार आगामी एक-दो दिन तक हल्की बारिश और बूंदाबांदी हो सकती है। स्थानीय निवासी प्रदपी कुमार ने कहा कि यह बारिश मौसम को तो सुहाना कर ही रही है, साथ ही खेती के लिए भी वरदान साबित हो रही है।

जींद। गोहाना रोड पर बूंदाबांदी के बीच गुजरता थ्रीव्हीलर चालक।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

अतिरिक्त सुझाव

1. **विविधीकरण** : अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश** : नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

काम की बात
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, ₹अगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- **फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना**
- **अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे**
- **अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा**

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

अहम खर्चे : किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

गैर-जरूरी खर्चे : बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंगा। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

मनोरंजन : कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

खान-पान : बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

शॉपिंग : अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

बिजली बिल : घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

फोन और इंटरनेट : अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

लोन की ईएमआई : अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं। इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट, भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कभी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।

प्लानिंग
बिजनेस डेस्क

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

खबर संक्षेप

दो अंडरट्रायल बंदियो को किया अंडरगोण

जींद। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जेल लोक अदालत का आयोजन किया गया। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव मोनिका ने जिला कारागार में लोक अदालत का आयोजन किया। जेल लोक अदालत में दो मामले विचाराधीन रखे गए। जिसमें से दो बंदियों को अंडरगोण किया गया। दो बन्दियों को रिहा करने का आदेश पारित किया। अगर विचाराधीन बंदी पर और कोई मुक़दमा नही हो।

हाई पावर कमेटी की बैठक 12 अगस्त को

नरवाना। नगरपरिषद नरवाना द्वारा जुलाई महीने में डोर टू डोर सफ्फाई के लिए जो टेंडर जारी किया था उसके अप्रुवल हेतु स्थानीय नप चेयरमैन एवं पार्षदो द्वारा प्रस्ताव पारित कर निदेशक शहरी स्थानीय निकाय हरियाणा को भिजवाया था। उसके बारे में जानकारी देते नगर परिषद सभापति मुकेश मिर्धा के प्रतिनिधि विशाल मिर्धा ने बताया कि उसके बारे में जो हाई पावर कमेटी की बैठक का आयोजन होना था कार्यकारी अधिकारी नप नरवाना रविन्द्र ने उनके पत्र 3081 7.8.2025 द्वारा जानकारी दी है कि उसके अप्रुवल हेतु एक हाई पावर कमेटी की मिटिंग 12 अगस्त को मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में सुबह 11 बजे मेन कमेटी रूम हरियाणा निवास सैक्टर. 3 बीए चंडीगढ़ में होना निश्चित हुई है।

बेटी के जन्म पर किया कार्यक्रम का आयोजन

उचाना । 19 साल बाद परिवार में बेटी का जन्म होने की खुशी में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कालीरामन खाप के उप प्रधान सुरेंद्र की शादी के 19 साल के बाद बेटी का जन्म हुआ। बेटी के जन्म पर पूरे गांव का न्योता देने के साथ-साथ प्रदेश में जितनी भी खापें है उनको निमंत्रण दिया गया। सुरेंद्र ने बताया कि 19 साल के बाद बेटी हुई है जिसकी खुशी में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

स्कूटी सवार व्यक्ति का मोबाइल लेकर फरार

कैथल। अनाज मंडी चीका के निकट से स्कूटी सवार दो युवा एक व्यक्ति का मोबाइल फोन छीनकर फरार हो गए। गांव काकोत के शीशपाल ने चीका पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 6 अगस्त को रात को करीब 8:00 बजे जब वह अनाज मंडी चीका से जा रहा था तो स्कूटी पर आए दो युवा उसका मोबाइल फोन छीन कर फरार हो गए।

सीनियर नेशनल फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप 28 से

कैथल। जिला कैथल नेटबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोक सहारण एडवोकेट ने बताया कि चौथी सीनियर नेशनल फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप का आयोजन नेता सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम, पलवल में 28 अगस्त से 31 अगस्त तक होने जा रहा है। इस चैंपियनशिप में हरियाणा की पुरुष और महिला दोनों टीमें भाग लेंगी। इसके लिए चौथी सीनियर स्टेट फास्ट 5 नेटबॉल चैंपियनशिप का आयोजन रॉयल पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम में 23 और 24 अगस्त 2025 को किया जा रहा है।

कैथल जेल में बहनों ने बांधी भाइयों को राखी

कैथल। जिला जेल में शनिवार को रक्षा बन्धन का पर्व मनाया गया। जेल में बन्द पुरूष बन्दियों को उनकी बहनों से महिला बन्दियों को उनके भाई से राखी जेल के मैनगेट में बन्धवाई गई। जेल प्रशासन द्वारा मिठाई, राखी, तिलक का सामान उपलब्ध करवाया गया। पर्व पर अधीक्षक जेल अशोक कुमार द्वारा बताया गया कि जेल में बन्द सभी बन्दियों के अन्दर अपराधबोध की भावना को कम करने और परिवार की दूरी के कारण मन में पैदा हुई निराशा व तनाव को दूर करने का प्रयास किया गया है।

मीठे पीले चावलों का भंडारा लगाया

कैथल। माल गोदाम रोड, हनुमान मार्केट संकट मोचन हनुमान की प्रतिमा के पास मीठे पीले चावलों का भण्डारे का आयोजन किया गया। भण्डारे का शुभारंभ फूल सिंह खेडी पूर्व विधायक एवं हरपाल क्योडक ने भगवान हनुमान जी सभी देवी देवताओं, जल देवता पर प्रसाद चढाकर किया।

जयंती देवी मंदिर में भजन संध्या का आयोजन

सावन माह के अंतिम दिन शिवालयों में सुबह से ही उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

बूंदाबांदी होने के बावजूद लोगों की आस्था में कोई कमी नही दिखी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

सावन माह के अंतिम दिन शनिवार को सुबह श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में शिव मंदिरों का रुख किया। बूंदाबांदी होने के बावजूद लोगों की आस्था में कोई कमी नही दिखी। श्रद्धालु बूंदाबांदी में भीगते हुए भी शिवालयों में पहुंचे भगवान शिव का जलाभिषेक किया। शहर के सभी शिव मंदिर राधा कृष्ण मंदिर, भूतेश्वर मंदिर, रानी तालाब मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, शिव मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही। सावन की फुहारों ने मौसम को और भी सुहावना बना दिया था। मंदिरों पर लोगों की भीड़ से उत्साह का माहौल था। हर किसी के चेहरे पर उमंग साफ दिखाई दे रही थी। श्रद्धालु अपने-अपने तरीके से पूजा पाठ किया।

श्रद्धालुओं का कहना था कि सावन का महीना अब एक वर्ष बाद ही आएगा। इसलिए हर कोई भक्ति भाव से भगवान शिव की पूजा कर जलाभिषेक कर रहा था। श्रद्धालु अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते दिखे। पूरे सावन माह के दौरान मंदिर प्रबंधन और पुजारियों ने भक्तों के दर्शन में सहयोग किया। मंदिरों में साफ.-सफाई का विशेष ध्यान रखा गया। श्रद्धालुओं के बैठने की उचित व्यवस्था भी की गई ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो। सावन माह में जयंती देवी मंदिर में हर दिन हुआ रूद्राभिषेक शहर के मध्य स्थित पौराणिक जयंती देवी मंदिर में सावन माह के हर दिन रूद्राभिषेक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने एकसाथ मिल कर भगवान शिव का जलाभिषेक किया। जयंती देवी मंदिर के पुजारी नवीन शास्त्री ने बताया कि सावन के अंतिम दिन भी मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ रही और भक्तों ने जलाभिषेक और रुद्राभिषेक किया। सावन का महीना भगवान शिव को समर्पित होता है और इस पूरे महीने में श्रद्धालु भगवान शिव की पूजा करते हैं।

जींद। जयंती देवी मंदिर में भगवान शिव की पूजा करते श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

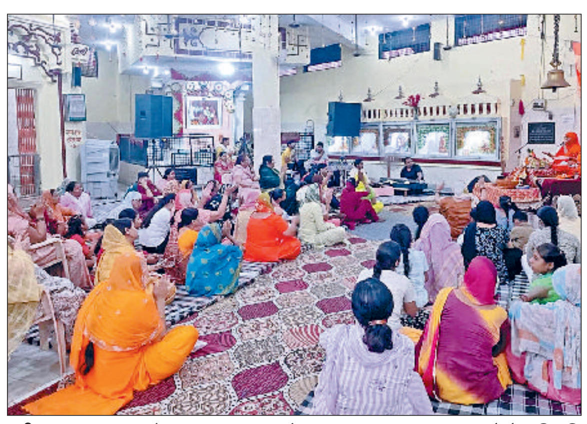

जींद। भजन संध्या में भगवत कथा सुनते श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

श्रावण माह शिव भक्तों के लिए विशेष : नवीन

जयंती देवी मंदिर के पुजारी नवीन शास्त्री ने बताया कि श्रावण माह को भगवान भोलेनाथ की भक्ति का महीना माना गया है। ऐसे में शिवभक्त पूरे श्रावण माह में भगवान आशुतोष की नियमित रूप से सच्चे हृदय व मन से पूजा करते हैं उसके सारे कष्ट व पाप दूर हो जाते है। जो श्रद्धालु पूरे श्रावण मास में सच्चे मन से जलाभिषेक, रुद्राभिषेक करता है उस पर भगवान आशुतोष की विशेष कृपा होती है।

जुलाना विधानसभा के चारों मंडलों में कल निकाली जाएगी तिरंगा यात्राः डा. पुष्पा तायल

सभी तिरंगा लेकर देश भक्ति के नारे लगाते यात्रा में भाग लेंगे

- सभी कार्यकर्ताओं व समाज सेवियों से निवेदन किया कि सभी इस यात्रा में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

जुलाना विधानसभा के चारों मंडलों जुलाना मंडल, रामराय मंडल, गतौली मंडल व बराह मंडल में 11 अगस्त को शाम पांच बजे तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। भाजपा की जिला महामंत्री डा. पुष्पा तायल ने कहा कि संगठन के निर्देशानुसार सभी मंडलों में तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। इसी कड़ी में जुलाना के सभी मंडलों में यह यात्रा 11 अगस्त को शाम पांच बजे निकाली जाएगी। तायल ने सभी कार्यकर्ताओं व समाज सेवियों से निवेदन किया कि सभी इस यात्रा में बढ़चढ़ कर हिस्सा लें व देशभक्तों को श्रद्धांजलि देने का काम करें। तायल ने कहा सभी कार्यकर्ता हाथ में तिरंगा लेकर देश भक्ति के नारे लगाते यात्रा में भाग लेंगे व ज्यादा से ज्यादा संख्या में अपनी हाजिरी सुनिश्चित करेंगे।

जींद। भाजपा की जिला महामंत्री डा. पुष्पा तायल।

पूंडरी। गांव फतेहपुर में पौधे वितरण करते समाजसेवी कंवरजीत वालिया।

शहीदी दिवस पर पौधरोपण

पूंडरी। गांव फतेहपुर में स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीद गिरधरलाल अहलूवालिया के शहीदी दिवस पर हर वर्ष की भांति इस बार भी पौधारोपण एवं पौधा वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व समाजसेवी कंवरजीत अहलूवालिया ने किया। इस अवसर पर लगभग 400 पौधों का वितरण किया गया, जिनमें 150 पौधे तुलसी के थे, जबकि शहतूत, अमरूद, गुलदाउदी, सदाबहार आदि के पौधे भी sशामिल थे। समाजसेवी कंवरजीत अहलूवालिया ने कहा कि शहीद गिरधरलाल अहलूवालिया ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश की आज़ादी की लड़ाई को मजबूत किया। उनकी स्मृति को जीवित रखने और आने वाली पीढ़ी को प्रकृति संरक्षण का संदेश देने के लिए हर वर्ष यह पौधारोपण व वितरण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

सिविल इंजीनियर से सवा लाख की ठगी

जींद। साइबर थाना पुलिस ने सिविल इंजीनियर के का मोबाइल हैक कर के उसके बैंक खाते से एक लाख 25 हजार रुपये निकालने पर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव निडानी निवासी दीपक ने साइबर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह सिविल इंजीनियर है और प्राइवेट नौकरी करता है। उसका बैंक खाता आईडीएफसी फस्ट बैंक में है। एक अगस्त को उसका मोबाइल फोन हैक हो गया। बैंक की तरफ से एक मैसेज आया। जिसमें भीम एप जोड़ दी गई। उसने भीम एप लिंक भी नहीं करवाई थी। कुछ देर बाद उसके बैंक खाते से चार ट्रांजेक्शन हुई। इनमें उसके खातें से 95 हजार 594 रुपये उसके बैंक खाते से कट गए। दो अगस्त को फिर से उसके मोबाइल पर मैसेज आया, जिसमें उसके बैंक खाते से 29 हजार 600 रुपये कट गए। उसके बैंक खाते से एक लाख 25 हजार 594 रुपये कटने के बाद उसे पता चला तो उसने ऑनलाइन शिकायत दर्ज करवाई। आठ अगस्त को उसने साइबर थाना में लिखित शिकायत दी। जिसके बाद साइबर थाना पुलिस ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सांस्कृतिक भावना के साथ रक्षाबंधन

नरवाना। डीबीके पब्लिक स्कूल नरवाना में रक्षाबंधन का पावन पर्व बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। इस उत्सव विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसकी शुरुआत स्कूल के गायक मंडल द्वारा गाए गए एक भावपूर्ण गीत से हुईए जिसमें भाई.बहन के प्रेम और एकता के सार पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद छात्रों ने रक्षाबंधन के भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्व को व्यक्त करते हुए भावपूर्ण कविता पाठ किया। इस सभा ने स्कूल परिसर में सौहार्दए सौहार्द और उत्सव का माहौल बनाया। इस उत्सव के दूसरे भाग मेंए विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के लिए राखी बनाने की गतिविधि का आयोजन किया गया। बच्चों ने पर्यावरण.अनुकूल सामग्रियों का उपयोग करके रंग.बिरंगी और नवीन राखियाँ बनाकर अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

नरवाना। राखी दिखाती छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

जुलाना। पेड़ पौधों को राखी बांधते महिलाएं। फोटो :हरिभूमि

पौधों को राखी बांध कर बनाया पर्व

जुलाना। बुड़ा खेड़ा गांव में ग्रामीणों ने पेड़ पौधों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का त्योहार मनाया। ग्रामीणों ने इस अवसर पर शपथ ली कि वह पेड़ पौधों की देखभाल अपने बच्चों की तरह करेंगे ताकि गांव में हरियाली छाई रहे। गांव की सरपंच अनिता ने बताया कि गांव में हरियाली रहे व पर्यावरण प्रदूषण न हो, इसलिए पंचायत ने गांव के चारों ओर चौराहा पर तालाबों पर व पार्क में पेड़ पौधे 500 से ज्यादा लगवाए थे। उन पेड़ पौधों की रखवाली भी की जा रही है। ग्रामीणों ने रक्षाबंधन के त्योहार पर पेड़ पौधों को राखी बांध कर अपना भाई, बहन बनाया है और ग्रामीणों ने और पंचायत ने ठान रखी है कि कुछ भी हो जाए वह हर वर्ष नए पेड़ पौधे लगाएंगे और उनकी देखभाल करेंगे जब तक वह बड़े नहीं हो जाए हो। आज रक्षाबंधन के अवसर पर 51 पेड़ पौधों को ग्रामीणों ने राखी बांधी है।

राखी बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन

उचाना। रक्षाबंधन का त्योहार चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल कसूहन में मनाया गया। राखी बनाओ, गिफ्ट रैपिंग प्रतियोगिता आयोजित की। विद्यालय प्रधानाचार्या रितु अत्री ने कहा कि यह त्योहार भाई.बहन के प्रेम और स्नेह का प्रतीक है। विद्यार्थियों की प्रतिभा और कौशल की प्रशंसा की और उन्हें भविष्य में भी इसी तरह के आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। एमडीएन हाई स्कूल अलीपुरा में रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर राखी बनाओए थाली सजावट आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की। स्कूल संचालक योगेश कुमार ने कहा कि रक्षाबंधन का त्योहार भाई बहन के पावन प्रेम का प्रतीक है। बहनें अपने भाइयों को रक्षासूत्र बांध कर लंबी उम्र की कामना करती हैं। प्रदीप कौशिक, रामनिवास, राकेश, संदीप, ललित, प्रीति, किरन, सुनीता, मोनिका, मनीषा, नीलम आदि मौजूद थे।

उचाना। प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी। फोटो :हरिभूमि

जींद। राखी बनाते हुए बच्चियां। फोटो :हरिभूमि

धूमधाम से मनाया रक्षाबंधन पर्व

जींद। इंडस पब्लिक स्कूल जूनियर विंग जींद में रक्षाबंधन का पर्व बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया। कक्षा नर्सरी से प्रथम के विद्यार्थियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की गतिविधियां करते हुए रक्षाबंधन के पर्व को मनाया। कक्षा द्वितीय के विद्यार्थियों के लिए स्पेशल असेंबली का आयोजन किया गया। जिसमें उन्होंने कविताओं व स्पीच के माध्यम से भाई बहन के अनूठे प्रेम का वर्णन किया। साथ ही साथ विद्यार्थियों के लिए थाली डेकोरेशन, कार्ड मेकिंग व राखी मेकिंग कंपटीशन भी करवाए गए। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का बहुत ही सुंदर परिचय दिया। अंत में मुख्य अध्यापिका गुरमीत कौर ने सभी को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भाई बहन का यह पावन रिश्ता जीवन भर साथ निभाना एक दूसरे की रक्षा करने और प्रेम बनाए रखने का संदेश देता है और हमें सभी पर्व मिलजुल कर हर्षोल्लास के साथ मनाने चाहिए।

कैथल। डा. एमएस शाह को राखी बांधती आरकेएसडी पब्लिक स्कूल की छात्रा।

छात्रों ने बांधे रक्षा सूत्र

कैथल। आरकेएसडी स्कूल में नन्हे-मुन्नों व छात्र-छात्राओं द्वारा शहर के विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं में जाकर रक्षा बंधन का पावन और पवित्र त्योहार मनाया गया। स्कूल के छात्र-छात्राएं कई संस्थाओं जैसे— शाह सुपर मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल, फायर ब्रिगेड ऑफिस, पीडब्ल्यूडी ऑफिस, पुलिस थाना आदि में गए और वहाँ डॉक्टर शाह, एसपी आस्था मोदी, पीडब्ल्यूडी एक्सियन श्री वरूण कंसल ट्रैफिक अधिकारी नरेश कुमार व फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों को राखी के उपलक्ष में रक्षा सूत्र बांधे। स्कूल की प्रधानाचार्या निवेदिता भट्ट ने बताया कि राखी का त्योहार भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रखता है। यह त्योहार भाई पर बहन की रक्षा के दायित्व का प्रतीक है और बहनों द्वारा अपने भाइयों की लंबी आयु की मनोकामना का। निवेदिता भट्ट ने बताया कि जीवन में अपने भाई बहनों के अलावा बहुत से ऐसे लोग हैं जो सदैव हम लोगों की रक्षा के लिए तत्पर है चाहे वे डॉक्टर हों, पुलिसकर्मी हों या अन्य कोई रक्षक बल—उनके प्रति सदैव कृतज्ञ बने रहना चाहिए और छात्र-छात्रों में यह भाव व संस्कार आरंभ से ही पैदा करने चाहिए।

200 मीटर में सुर्यांश ने मारी बाजी

- खेल प्रतियोगिता में विवेकानंद विद्या निकेतन के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

हाल ही में आयोजित ब्लॉक स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता में विवेकानंद विद्या निकेतन के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अनेक पदक अपने नाम किए और विद्यालय का नाम रोशन किया। शतरंज अंडर 11 में सान्वी, सेल्वी, दिया, रक्षिता और कायना की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अथलेटिक्स अंडर 11 में 100 मीटर दौड़ में सुर्यांश ने प्रथम तथा रोमित ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर में सुर्यांश प्रथम रहे। 400 मीटर में रोमित ने तृतीय स्थान हासिल किया। एथलेटिक्स अंडर 14 में हाई जम्प में ईशांत ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 80 मीटर हर्डल रेस में ईशांत ने द्वितीय तथा रुद्र ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शॉट पुट में तनिष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अंडर 14 बालिका वर्ग में 80 मीटर हर्डल रेस में सौम्या ने प्रथम तथा पीहू ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की प्राचार्या मंजीत श्योकंद और कोच अजय ने सभी विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

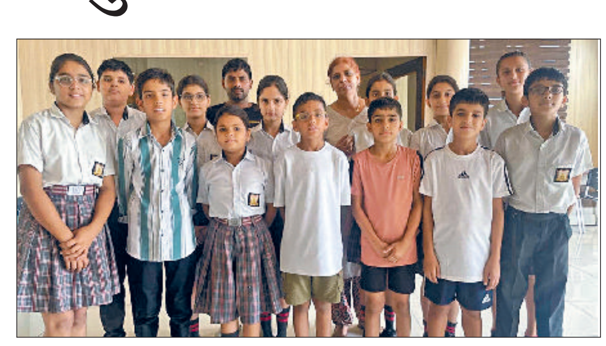

जींद। प्रतियोगिता में विजेता रहे खिलाड़ी। फोटो :हरिभूमि

उचाना। प्रतियोगिता में रस्सा-कस्सी में दमखम दिखाते खिलाड़ी।

खंडस्तरीय प्रतियोगिताओं का शुभारंभ

उचाना। गांव खरकभूरा के खेल परिसर में खंडस्तरीय प्राइमरी अंडर 11 का शुभारंभ प्रिंसिपल करसिंधु जियालाल द्वारा किया गया। लड़कियों की 800 मीटर दौड़ को रही झंडी दिखा कर प्रतियोगिता की शुरूआत की। सरकारी, गैर सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। 500 के करीब खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता ने हिस्सा लिया। जियालाल ने कहा कि प्रदेश सरकार एवं केंद्र सरकार खिलाड़ियों के लिए हर प्रकार की सुविधा प्रदान करती है। शिक्षा विभाग विद्यार्थियों को खेलों में बढ़ावा देने के लिए खंड स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। प्रतिभाओं की कमी नहीं है। खंड स्तर की प्रतियोगिता में हिस्सा लेने से प्रतिभाओं को आगे आने के अवसर मिलते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी विद्यार्थियों को रूचि लेनी चाहिए। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रतियोगिता महेंद्र श्योकंद, इंचार्ज मा. सतविंद्र, वीरेंद्र, सुशील कुमार, विजेंद्र शर्मा, सुरेंद्र कुमार, प्रदीप कुमार, सुरेश कुमार मौजूद रहे।

महिलाओं के यौन उत्पीड़न विषय पर कार्यशाला का आयोजन

सामाजिक कुप्रथा के खिलाफ आवाज उठाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण-डीएलएसए- कैथल की ओर से न्यायिक कर्मचारियों, पैनल अधिवक्ताओं और अर्ध-विधिक स्वयंसेवकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए छह अगस्त से 13 अगस्त तक चरणबद्ध तरीके से विशेष कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसमें /"कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013 एवं इसके नियमों की जानकारी प्रदान की गई। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं सचिव कंवल कुमार ने कहा कि बदलाव का समय अब आ गया है और इसकी शुरुआत हम सभी से होगी। हम सब मिलकर कार्यस्थल की पुनर्कल्पना और उसे नया रूप दे सकते हैं, जिससे यह सम्मान, समानता और सशक्तिकरण का केंद्र बन सके। कार्यशाला में अधिवक्ता अरविंद खुरानियां ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को कार्यस्थल पर महिला का यौन शोषण (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013 के नियमों एवं प्रावधानों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग अभी भी यौन उत्पीड़न के आपराधिक प्रभावों से अनजान हैं। भद्दे चुटकुलों और अनुचित टिप्पणियों को अक्सर सामान्य मानकर खारिज कर दिया जाता है, जिससे अविश्वास या उपहास के डर से महिलाओं को कार्रवाई करने में झिझक होती है। POSH अधिनियम का प्रभावी कार्यान्वयन महिलाओं के लैंगिक समानता, जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार और कामकाजी परिस्थितियों में समानता को साकार करने में योगदान देगा। नियोक्ताओं, प्रबंधकों और कर्मचारियों के बीच इस कानून के बारे में जागरूकता फैलाना, इस कानून के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दिशा में पहला कदम है। इसलिए, यह ज़रूरी है कि हम सभी मिलकर 'यौन उत्पीड़न' जैसी सामाजिक कुप्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाएँ और POSH अधिनियम के प्रावधानों के बारे में जागरूकता फैलाने में अपनी भूमिका निभाएं।

कैथल। कार्यशाला को संबोधित करते वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद खुरानियां।

राजौंद। नदी तर्पण में भाग लेते।

श्रावणी पर्व पर किया तर्पण

राजौंद। श्रावणी पर्व मनुष्य को देव, ऋषि व पितृ दोष से मुक्ति दिलाता है तथा दोष निवारण के लिए तर्पण अनुष्ठान में शामिल होने मात्र से मनुष्य दोष मुक्त हो जाता हैं। आचार्य पंडित राम भगत हरित ने नगर के जींद रोड पर स्थित नहर के किनारे आयोजित तर्पण कार्यक्रम के दौरान कहे। कार्यक्रम के संयोजक आचार्यों ने बताया कि इस आयोजन को पिछले लगभग 72 वर्षों से प्रतिवर्ष आयोजित कर रहे हैं। तर्पण के उपरांत विधि पूर्वक सप्तऋषि पूजा, यज्ञोपवीत पूजा तथा हवन यज्ञ किया गया, जिसमें सभी ने पूर्ण आहुति डालकर पुण्य कमाया। आचार्यों ने बताया कि यज्ञोपवीत धारण करने वाले व्यक्ति को यज्ञ में आहुति धर्म-कर्म अनुष्ठान करने का अधिकार प्राप्त होता है। यज्ञोपवीत धारण करने से गायत्री की दीक्षा मिलती है तथा गायत्री जप का फल प्राप्त होता है। श्रावणी कर्म इंसान के मन, वचन, काया से किए पाप कर्मों का प्रायश्चित माना गया है। आचार्य राम भगत हरितस, राजेंद्र शर्मा, सोनू दीक्षित, सतबीर शास्त्री, संजीव हरित, जयदेव कौशल, रमेश कुमार, सतीश कौशल, अमित करोड़ा, धर्मवीर आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

बहनों ने राखी बांध की भाई की लंबी उम्र की कामना

उचाना। रक्षाबंधन का पर्व क्षेत्र में हर्षोंल्लास के साथ मनाया गया। बसों में बहनों के लिए सरकार द्वारा मुफ्त बस सेवा की सेवा करने से बसों में भारी भीड़ नजर आई। भाइयों के कलाई पर राखी बांध कर बहनों ने उनकी लंबी उम्र की कामना की। सावन माह का अंतिम दिन होने के चलते मंदिरों में भी भीड़ उमड़ी। बाजारों में राखी के पर्व के चलते राखी के स्टॉल दुकानों के आगे नजर आए तो मिठाई की दुकानों पर भी देशी घी की जलेबी सहित अन्य मिठाई बनाई गई।

जरूरतमंद बहनों से राखी बंधवाकर रक्षाबंधन मनाया

राजौंद। श्याम हरी सेवा ट्रस्ट कैथल के प्रधान सतीश शर्मा व ट्रस्ट के अन्य सदस्यों नें जरूरतमंद बहनों से राखी बंधवाकर रक्षाबंधन मनाया रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सतीश शर्मा नें बताया की भाई और बहन के पावन रिश्ते को ये रक्षा सूत्र नाम का धागा और भी मजबूत बनाता है तभी तो सदियों से इस पावन पर्व के दिन हर बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसके सुखद जीवन की कामना करती है और उम्मीद करती है हर दुख संकट की घड़ी मे उसका भाई उसका सहारा बनेगा। रक्षाबंधन के इस पावन पर्व के दिन हर बहन अपने भाई का इंतजार करती है। इतना हीं नहीं भाई बहन के पावन पर्व को लेकर लंम्बे समय से प्रदेश सरकार द्वारा भी बहनो के हरियाणा रोडवेज की बसों मे निशुल्क सफर की व्यवस्था की जा रही है ताकि अपने भाइयो को राखी बांधने जाने के लिए उन्हें कोई वाहन की समस्या न आए।

राखी मेकिंग और थाली डेकोरेशन स्पर्धा करवाई

राजौंद। आरोही मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में राखी मेकिंग और थाली डेकोरेशन पर आधारित कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रतियोगिता दो समूह में प्रस्तुत की गई कक्षा 6 से 8 और 9 से 12 तक छात्राओं ने सुंदर प्रस्तुतियों के द्वारा अपने मन की भावनाओं को व्यक्त किया। इस दौरान विद्यालय की प्राचार्य डॉक्टर सुनीता आहूजा ने बताया कि विद्यालय में इस तरह की प्रतियोगिताएं समय-समय पर आयोजित होती रहती है। ताकि विद्यालय में उत्साह का माहौल बना रहे। प्राचार्य ने बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समुचित विकास होता है।

जिलेभर में धूमधाम से मनाया रक्षाबंधन का पर्व

- पूरे दिन था राखी बांधने के लिए शुभ मुहुर्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

जिलेभर में भाई व बहन के प्यार का प्रतीक रक्षा बंधन का पर्व शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। इस बार रक्षाबंधन पर्व पर भद्रा का साया नही था तो पूरा दिन राखी बांधने के लिए शुभ मुहुर्त था। ऐसे में बहनों ने अपने भाइयों को निसंकोच होकर राखी बांधी। बहनों ने अपनी भाइयों को तिलक लगा कर मुंह मीठा करवाया और राखी बांध कर उनकी लंबी उम्र की कामना की। भाइयों ने जहां बहनों को उनकी रक्षा का वचन दिया वहीं उपहार भी दिए। बहनों ने भाइयों की कलाई पर राखियां बांध कर भाइयों को मिठाई खिलाई। दूर-दराज के क्षेत्र से भाई अपनी बहनों से राखी बंधवाने के लिए पहुंचे। बहनों ने भाइयों की लंबी उम्र की कामना की और भाइयों ने बहनों को उपहार देकर उनकी रक्षा का संकल्प लिया।

बाजारों में रही रौनक

भाई-बहन के प्यार के प्रतीक रक्षा बंधन पर बाजारों में भी पूरा दिन रौनक नजर आई। राखी के साथ-साथ मिठाइयों की दुकानों पर खासी भीड़ नजर आई। महिलाओं ने भाइयों का मुंह मीठा करवाने के लिए स्पैशल तौर पर घेवर व मावे की मिठाइयां खरीदी। वहीं बहनों को उपहार देने के लिए भाइयों ने बाजार से कपड़े व अन्य उपहार खरीदे, जिसके चलते बाजार में खासी रौनक नजर आई।

दिनभर गूंजते रहे राखी के गीत

भाई की कलाई पर बांधा स्नेह का धागा

जींद। रक्षा बंधन पर्व पर भाई को राखी बांधते हुए बहन।

फोटो : हरिभूमि

बांधा भाइयों की कलाई पर प्यार

कैथल। मैं पायल सहारण अपने भाई जयंत सहारण को राखी बांधते हुए

पुण्डरी में बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधते हुए।

दिनभर गुंजते रहे राखी के गीत

इसे समझो न रेशम का तार भइया, मेरी राखी का मतलब है प्यार भइया या फिर भइया मेरे राखी के बंधन को निभाना सरीखे गीत भी रक्षा बंधन के अवसर पर दिनभर सुनाई दिए। भाइयों की कलाइयों पर स्नेह की डोर बन कर राखियां जगमगाई तो माथे पर तिलक सजा और हाथों में राखियां बांध कर मिले रक्षा के संकल्प से बहने गौरांवित भी हुई।

कार्टूनों की राखियों की धूम रही

राजौंद । भाई बहन के प्यार का प्रतीक रक्षा बंधन का पर्व धूमधाम से मनाया गया। रक्षा बंधन पर्व के दिन बाजारों में खूब रौनक रही। महिलाओं व छोटे बच्चों में इस पर्व को लेकर काफी उत्साह देखने को मिला। नगर के मेन बाजार में रूद्राक्ष, मोती चंदन, बच्चों के खिलौनों,कार्टूनों की राखियों की धूम मची रही। नगर के पूंडरी चौंक के दुकानदारों ने अपनी दुकानों के बाहर राखियों के स्टाल लगाए हुए थे। मार्केट में 5 रुपए से लेकर 300 रुपए तक की राखियां मिल रही थी। दुकानदार नीरज, योगेश, कुलदीप, गोल्डी, सुभाष रावल, रमेश कुमार ने बताया कि इस बार लोगों में पहले की अपेक्षा काफी उत्साह देखने को मिला। इस बार रक्षा बंधन पर कलाइयों पर बांधने वाली राखियों की ही नहीं बल्कि राखी के ग्रीटिंग की भी काफी मांग रही। रक्षा बंधन का त्योहार बहन भाई के प्यार का प्रतीक है।

जिला कारागार में बहनों ने भाइयों को बांधी राखी, आंखों से झरने लगे आंसू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

बहनें अपनी भाइयों की कलाई पर राखी बांध रही थी और उनकी आंखें नम थी। भाई भी अपनी बहन को अपने बेहद करीब पाकर खुश थे। जैसे ही बहन ने अपने भाई की कलाई पर राखी बांधी तो बहन व भाई दोनों ने एक-दूसरे का लड्डू से मुंह मीठा करवाया। यह नजारा था जिला कारागार का।

शनिवार को महानिदेशक कारागार आलोक राय के आदेशानुसार जिला कारागार में बंद बंदियों को उनकी बहनों द्वारा जेल प्रशासन के सहयोग से राखियां बांध कर रक्षाबंधन का त्यौहार पूरे उत्साह के साथ मनाया गया।

जिला कारागार में बिना किसी दीवार के भाइयों को एकसाथ राखी बांधते हुए बहनें।

सौहार्दपूर्ण वातावरण में रक्षा बंधन पर्व मनाया : दीपक कुमार

जेल अधीक्षक दीपक शर्मा ने बताया कि रक्षाबंधन का त्योहार भाई-बहन के प्यार का प्रतीक है। इस दिन भाई अपनी बहन की हर स्थिति में रक्षा करने का वचन देते है। जिला जेल में बंद सभी पुरुष बंदियों को उनकी बहनों से व महिला बंदियों द्वारा बाहर से आए अपने भाइयों को राखियां बधंवाई गई तथा राखियों, रक्षासूत्र व लड्डू मिठाई का प्रबंध भी जेल विभाग द्वारा किया गया ताकि जेल में बंद पुरुष व महिला बंदी केवल जेल में रहने के कारण अपने मौलिक अधिकारों से वचिंत ना रहने पाएं और जेल में बंद होने के कारण उनके अंदर अपराधबोध की भावना न आए।

भाइयों के मंगलमय जीवन की कामना की

- बहनों ने रक्षासूत्र बांधकर भाई की लंबी आयु की कामना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

जिले में शनिवार को रक्षाबंधन पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सभी परिवारों ने, बहनों ने अपने भाइयों को राखियां बांधी तथा उनके मंगलमय जीवन की कामना की। भाइयों ने भी बहनों की रक्षा का वचन दिया। रक्षाबंधन पर्व पर नगर के मंदिरों व धार्मिक स्थानों पर विभिन्न आयोजन किए गए। दिनभर नगर में खासी चहल पहल रही तथा बाजारों में रक्षाबंधन पर्व को लेकर राखियों, मिठाइयों इत्यादि के खरीददार महिला पुरुषों की भीड़ लगी रही। रक्षाबंधन पर्व पर साधु संतों ने प्रवचनों का आयोजन किया तथा इस पर्व के धार्मिक एवं अध्यात्मिक महत्व को बताया।

विश्वास, प्रेम और वचन का प्रतीक है रक्षाबंधन

संगीतज्ञ एवं पूर्व अध्यापक श्याम सुंदर गौड़ ने बताया कि राखी का त्योहार विश्वास, प्रेम, वचन का और हर पल साथ निभाने की सीख देता है। बहनें अपने भाई की कलाई पर केवल राखी का धागा नहीं बांधती हैं बल्कि इसके साथ वो अपना भरोसा और प्रेम अपने भाई के प्रति व्यक्त करती हैं। भाई भी अपनी बहन की हर परिस्थिति में रक्षा करने का वचन देता है। गौड़ ने कहा कि संस्कृति के अनुसार राखी बांधते समय भाई का मुख उत्तर या पूर्व दिशा में होना चाहिए और तिलक करते समय सिर कपड़ा, रुमाल इत्यादि से ढका होना चाहिए। हर त्योहार की तरह रक्षाबंधन का पर्व भी खुशियां लेकर आता है। रक्षाबंधन के दिन कान्हा और गणेश जी की विशेष पूजा करने से सभी कष्टों का अंत हो जाता है।

प्रजापति ब्रह्माकुमारी आश्रम, प्राचीन हनुमान मंदिर, इत्यादि में सत्संग, भजन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। रक्षाबंधन के अवसर पर सुबह से ही अपने भाइयों के यहां जाकर राखियां बांधने वाली महिलाओं की भीड़ लगी देखी गई। दूसरी ओर दूर दूर से बड़ी तादात में भाई भी बहनों के यहां प्रेम, श्रद्धा, विश्वास के प्रतीक धागे को बंधवाने के लिए आए। अपने भाइयों को राखी बांधने के लिए कैथल के बस स्टैंड पर पहुंची महिलाओं की खासी भीड़ देखी गई।

इंटरनेट मीडिया पर भी पर्व की धूम

भाई बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन इंटरनेट मीडिया पर भी छाया रहा। व्हाट्सअप ग्रुप, फेसबुक इत्यादि पर भी लोगों ने रक्षाबंधन बधाई के संदेश एक दूसरे को भेज कर खुशियां बांटी। फेसबुक व व्हाट्सअप पर लोग बहनों की कलाई पर राखी बंधाने की तस्वीर शेयर कर बहन का आशीर्वाद प्राप्त होने की बात भी साझा कर रहे थे। कई जगह भाइयों ने राखी बंधवाने की अपनी फोटो को अपने व्हाट्सअप की डीपी पर लगाया। देर शाम तक बधाइयों का दौर जारी रहा।

अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना प्राथमिकता : जगमोहन

पूंडरी। करनाल के विधायक जगमोहन आनंद कैथल में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने के पश्चात गांव टयौंठा में भाजपा नेत्री एवं समर्पित कार्यकर्ता बहन निधि मोहन के फार्म हाउस पर रुके। इस मौके पर पंजाबी समाज द्वारा विधायक जगमोहन आनंद का आत्मीय स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पंजाबी समाज के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभाजन के इतिहास और उससे जुड़े संघर्षों को स्मरण किया गया। विधायक जगमोहन आनंद नें कहा कि प्रदेश में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में भाजपा सरकार द्वारा विकास की नई और मजबूत व्यवस्था लागू की गई है। आज प्रदेश के सभी क्षेत्रों में विकास योजनाओं का लाभ बिना किसी भेदभाव के पारदर्शिता के साथ पहुंच रहा है।

सीएम का 17 को नरवाना में आगमन भाग्य बदलने वाला क्षण होगा साबित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नरवाना

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि मुख्यमंत्री का 17 अगस्त को नरवाना में आगमन हलके के लिए भाग्य बदलने वाला क्षण साबित होगा। उन्हें पूरा विश्वास है कि मुख्यमंत्री करोड़ों रुपये की नई विकास योजनाओं की घोषणा करेंगे जिनमें सड़कए स्वास्थ्यए शिक्षाए खेल सुविधाओं और ग्रामीण बुनियादी ढांचे को लेकर बड़े प्रोजेक्ट शामिल हो सकते हैं। कैबिनेट मंत्री कृष्ण कुमार बेदी शुक्रवार देर सायं विधानसभा हलका के गांव कोयल में आयोजित ग्रामीण सभा को संबोधित कर रहे थे। कैबिनेट मंत्री इन दिनों नरवाना हलके के गांव.गांव में लगातार धन्यवादी दौरे कर रहे हैं। इन दौरों में वे जहां जनता का आभार व्यक्त कर रहे हैंए वहीं आगामी 17 अगस्त को नरवाना में होने वाली मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की ऐतिहासिक विकास रैली के लिए ग्रामीणों का अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का आह्वान भी कर रहे हैं। कैबिनेट मंत्री ने ग्रामीणों की करीब 2 दर्जन मांगों को मंजूर करते हुए लगभग 2 करोड़ 75 लाख रुपये की विकास परियोजनाओं को स्वीकृति दी। कैबिनेट मंत्री ने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि वे कभी भी बदला एवं बदली की राजनीति में विश्वास नहीं रखते बल्कि निष्पक्ष तरीके से और निस्वार्थ भाव से जन सेवा को अपना नैतिक फर्ज समझते हैं और इस जिम्मेदारी को वे बखूबी निभाएंगे। गांव में पहुंचने पर कैबिनेट मंत्री का ग्रामीणों ने फूल मालाए पुष्प वर्षाए आतिशबाजीए पगड़ी शाल तथा स्मृति चिन्ह इत्यादि के साथ भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर गांव की महिला सरपंच कविता देवी बलदेव वाल्मीकि मंडल अध्यक्ष सुरेंद्र हथो सत्यवान शर्मा आदि मौजूद रहे।

कैबिनेट मंत्री को स्मृति चिन्ह देते हुए।

झालावाड़ हादसे को लेकर आप का हमला, प्रदेश के स्कूलों की बदतर स्थिति को लेकर सरकार को घेरा

कैथल। आम आदमी पार्टी ने जिला कार्यालय में प्रेस वार्ता कर हरियाणा में सरकारी स्कूलों की जर्जर हालत को लेकर सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। प्रेस वार्ता को जिला अध्यक्ष जगमग मटौर और शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष मास्टर सतबीर गोयत ने संबोधित किया। आप नेताओं ने राजस्थान के झालावाड़ में स्कूल की बिल्डिंग गिरने से 7 बच्चों की मौत को हृदयविदारक बताते हुए कहा कि हरियाणा में भी हालात किसी विस्फोटक स्थिति से कम नहीं हैं। उनका कहना था कि प्रदेश के 80 प्रतिशत से अधिक स्कूलों की इमारतें जर्जर हैं, लेकिन सरकार का इस ओर कोई ध्यान नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि चाहे वर्तमान भाजपा सरकार हो या पूर्व की कांग्रेस सरकार, दोनों ही ने स्कूलों की स्थिति सुधारने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए। हजारों स्कूल कंडम घोषित हैं, कई में बेंच, टॉयलेट और पीने के पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं तक नहीं हैं।

भारत-नेपाल टेपबॉल सीरीज में भारतीय महिला टीम ने 3-1 से जीत दर्ज की

कैथल। इंटरनेशनल टेपबॉल काउंसिल की ओर से नेपाल में आयोजित भारत-नेपाल टेपबॉल सीरीज में भारतीय महिला टीम ने 3-1 से जीत दर्ज की। इस टीम की उप कप्तान श्वेता रही जो कस्बा सीवन से संबंधित थी। इसके अलावा कुरुक्षेत्र से कनिष्क व फरीदाबाद से सिमरन भी टीम की सदस्य रहीं। सीरिज की इस जीत के बाद हरियाणा टेपबॉल संघ के महासचिव संजय सेन ने टीम में शामिल हुई प्रदेश की खिलाड़ियों को फोन पर बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। महासचिव संजय सेन ने बताया कि इस सीरिज का आयोजन नेपाल के पोखरा शहर में किया गया था। इस सीरिज में महिला टीम ने 3-1 से जीत कर सीरिज अपने नाम की। जीत की खबर सुनते ही पूरे भारतीय टेबल संघ में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।

नरवाना शहर में सफाई व्यवस्था का बुरा हाल

नरवाना। शहर में सफाई व्यवस्था को लेकर बहुत बुरा हाल है शहर में मॉडल टाउन हुड्डा ग्राउंड पुरानी अनाज मंडी लोहा मंडी में कूड़े के ढेर लगे हुए हैं कूड़ा सड़कों पर फैला हुआ है आने जाने वालों को बहुत दिक्कत हो रही है कूड़ा में बदबू बहुत ज्यादा आ रही है। नरवाना वेलफेयर मंच के अध्यक्ष सरदार हरचरण सिंह जी ने कहा अनाज मंडी लोहा मंडी में जहां पर कूड़े के ढेर पड़े हैं वहां पर दुकानदारों में रोष है कि वहां सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है कूड़ा को कोई नहीं उठाने वालाए म्यूनिसिपल कमेटी के कर्मचारी वहां कूड़ा डालकर चले जाते हैं। मंडी में काम करने वाले लेबर के साथी बैठकर खाना खाने के लिए मजबूर है वही रेडी व अन्य वाहन भी पास में खड़े होते हैं इस कूड़े की वजह से बहुत ज्यादा भयंकर बीमारी फैलने का डर है। इसी तरह हुड्डा ग्राउंड में कूड़े के ढेर लगा दिए गए हैं।

फतेहपुर में रक्षाबंधन पर हवन कर शहीद गिरधरलाल को दी श्रद्धांजलि

- रक्षाबंधन के दिन हुए थे अंग्रेजी शासनकाल में शहीद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ पूंडरी

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर गांव फतेहपुर में सभी बिरादरी के लोगों ने गांव के वीर सपूत एवं स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीद गिरधरलाल अहलूवालिया को नमन करते हुए हवन यज्ञ का आयोजन किया। यह कार्यक्रम शाहिद गिरधरलाल अहलूवालिया पुस्तकालय परिसर में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण और गणमान्य लोग शामिल हुए। गांव के इस परिवार के लोग आज भी इस पर्व को मनाने की बजाए अपने शहीद की याद में हवन करवाते है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पार्षद एवं इनेलो युवा जिलाध्यक्ष देवेंद्र शर्मा ने भाग लिया। मुख्य अतिथि शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि शहीद गिरधरलाल अहलूवालिया ने अंग्रेजी शासनकाल में ग्रामीणों पर हो रहे अत्याचारों का डटकर विरोध किया। कर वसूली के नाम पर हो रहे जुल्म देखकर उन्होंने लाठी के एक प्रहार से अंग्रेज अधिकारी को मौत के घाट उतार दिया। ग्रामीणों ने बताया कि तब से सुल्याण गोत्र के अधिकांश परिवार रक्षाबंधन का पर्व नहीं मनाते, बल्कि इस दिन हवन कर अपने शहीद को श्रद्धांजलि देते हैं। इस मौके पर सुनील कुमार, प्रधान आर्य समाज फतेहपुर धर्मपाल अहलूवालिया, प्रधान वृद्ध आश्रम फतेहपुर जगजीत, अहलूवालिया, प्रधान अहलूवालिया समाज कल्याण समिति दिलीप कपूर आदि मौजूद रहे।

पूंडरी। फतेहपुर में शहीद की याद में आयोजित हवन में आहुति डालते ग्रामीण।

सड़क पर बेवजह खड़े वाहन दुर्घटनाओं का बनते हैं कारण

यातायात नियमों के उल्लंघन पर कैथल पुलिस सख्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

जिला कैथल में सड़क हादसों पर अंकुश लगाने और नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यातायात पुलिस ने नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्ती दिखानी शुरू कर दी है। एसपी आस्था मोदी ने सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिए हैं कि वाहन चालकों द्वारा लेन ड्राइविंग की उल्लंघन करने और सड़क पर बिना वजह खड़े वाहन दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। इनमें सुधार के लिए सख्त कदम उठाने की जरूरत है। यातायात पुलिस द्वारा शुक्रवार को चैकिंग के दौरान हाईवे पर लापरवाही व गलत लेन में वाहन चलाते पाए जाने पर 4 वाहन चालकों के खिलाफ केस दर्ज किया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि एनएच 152 पर कलायत के पास ट्रैफिक पुलिस द्वारा चेकिंग दौरान गलत दिशा में ट्रक चलाने वाले चालक कलायत निवासी मोनू व यूपी निवासी कृष्णा के खिलाफ मामला थाना कलायत में अलग अलग 2 मामले दर्ज किए गए। अन्य मामलों में ट्रैफिक पुलिस द्वारा चैकिंग दौरान एनएच 152 पर हरसोला कट व काकौत कट के पास गलत लेन में ट्रक चला रहे बिशन नगर भवानी जिला संगरूर पंजाब निवासी नरेंद्र व हरदुसरू जिला बारामुला जम्मू कश्मीर निवासी ईमरान के खिलाफ थाना तितरम में अलग अलग मामले दर्ज किए गए। प्रवक्ता ने बताया कि जिले में सड़क सुरक्षा के नियमों की पालना को सुनिश्चित करने के संबंध में एसपी आस्था मोदी द्वारा कड़े दिशा निर्देश दिए गए हैं। नेशनल हाईवे व स्टेट हाईवे पर सड़क हादसों से होने वाले जानमाल के नुकसान को रोकने तथा यातायात नियमों की पालना करने को लेकर यह कदम उठाया गया है। प्राय देखने में आता है कि हाईवे पर ज्यादातर हादसे भारी वाहनों की वजह से होते हैं। इन हादसों में काफी लोगों की जान चली जाती है और अनेक व्यक्ति अपाहिज भी हो जाते हैं। जिले से होकर गुजरने वाले नेशनल हाईवे व स्टेट हाईवे पर हादसे रोकने के लिए अब जिला पुलिस द्वारा विशेष नजर रखी जाएगी।

स्वाधीनता दिवस विशेष

आवरण कथा
ओम निश्चल

79वां स्वतंत्रता दिवस
आजादी की फलश्रुति

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका: आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है-*यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है-
तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुझको-आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विक्षुब्ध कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

क्यों बंटते गए दायरों में हम: यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्य: इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मीनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्त्रादि विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिका: हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजाद हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

हर चुनौती को पार कर
हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

ढाई शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

फर्श से पहुंचे अर्श पर: हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

करना पड़ा कठिन संघर्ष: जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

निरंतर बढ़ते रहे आगे: साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रम: 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

दूर करनी होंगी कमजोरियां: हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

तब नई पीढ़ी भी समझेगी
स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनमा की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

डिजिटल जनरेशन की दुनिया: हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

नए जमाने की जीवनशैली: हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

पिछली पीढ़ी निभाए दायित्व: मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होंगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

उनके सवालों का दें तार्किक जवाब: नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

किताब: अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखक:** संतोष भदौरिया, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

विशेष: जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

इंफाल की रास लीला, मणिपुर

देश का उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

मुंबई में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

दक्षिण भारत में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काठमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

नया दौर
लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं: आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

संस्कृति की सॉफ्टपावर: एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

कृष्ण की यूनिवर्सल अपील: श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

कहानी
आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

आजाद वीकेंड

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

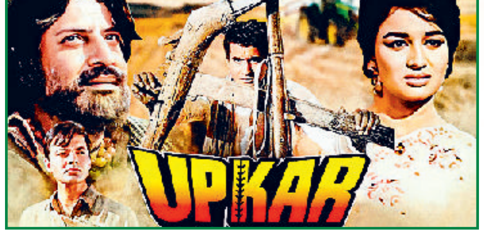

शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *